

3	9	6
2	4	8
2	2	2

at. 11.

सूची-पत्र

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
संख्या विषय मन्त्र	६	स्थान खोदने	२०
मन्त्र-तन्त्र सिद्धि के विषय	७	लहंगा माथे चढ़े	२२
षट्कर्म वर्णन	७	कमर के नारा दूटे	२२
श्रुतिदिन नक्षत्रानुसार षट्कर्मों		स्त्री स्तन जाता रहे	२२
के करने का चक्र	६	कुल करिश्मे	२४
यन्त्र जप माला-निर्णय	१०	अग्नि से हाथ न जले	२५
जप भेद और लक्षण	११	विभिन्न रूप	२५
मंत्रजप में बैठने का आसन	१२	पानी में न डूबे	२७
हवन सामग्री	१२	बिड़ाल सिद्धि	२८
माला फेरने की अंगुलियों		छाते के खेल	३०
का नियम	१३	बिना गिश्वास	३१
आसन	१३	आसानी से चिड़िया	३२
सर्व वशीकरण मन्त्र	१४	यक्षिणी साधन	३३
वशीकरण पुष्प यन्त्र	१४	भण्डार भरा रहे	६४
सर्वजन वशीकरण मंत्र	१५	अन्न वृद्धि मंत्र	६५
मोहन मंत्र	१५	गणेश चीटक	६६
सर्वजन वशीकरण मंत्र	१५	स्त्री वशीकरण मंत्र	६६
राजकुल मोहनी	१६	विजय पाना	६८
कुत्ता काटने की दवा	१६	शत्रु दूर हो	६६
श्री कामाक्षा मंत्र	१६	गणपति सिद्धि मंत्र	६६
श्री लक्ष्मी देवी	१६	वीर्य वृद्धि मंत्र	६६
रोजी रोजगार	२०	शत्रु लड़े	७०

संखिया विष मारण

संखिया — इसके खा लेने के आधा घण्टे बाद उसके लक्षण प्रकट होने लगते हैं । संखिया खा लेने के बाद नीले या काले रंग की उल्टी होती है, पेट में जलन और दर्द होता है । प्यास बहुत लगती और दस्त भी आते हैं । कभी कभी शरीर बहुत ठण्डा हो जाता है और नींद सी आती है । इनको दूर करने के लिये नीचे लिखे उपाय करने चाहिये ।

उपाय—रोगी को ऐसी चीज पिलानी चाहिये उसे भली भाँति उल्टी हो जाय । यदि रोगी को उल्टी आ रही हो तो उसे गरम पानी पिलाकर उल्टी करा देनी चाहिए । यदि उल्टी न होती हो तो राई और नमक को पानी में घोलकर पन्द्रह-पन्द्रह मिनटके अन्तर से पिलाना चाहिए यदि इससे भी न हो तो गले में ऊँ गली डालकर करानी चाहिये, उल्टी करने के बाद अण्डों की सफेदी अलसी के दानों की चाय या चूने का पानी और तेल पिलाना चाहिये । ऐसा करने से संखिया का विष दूर हो जायेगा ।

क्लोरोफार्म—इसका विष चढ़ जाने पर रोगी को ताजी वायु का सेवन कराना चाहिये, रोगी की ज़बान को खींचना चाहिए । गरदन के कपड़े अथवा कोई पहनी हुई चीज़ निकालकर ढीला कर देना चाहिये नौसादर को नाक में सुँघाना चाहिए ।

महा वशीकरण मन्त्र

तन्त्र शास्त्र सात्वकी, राजसी, तामसी तीन भागों में विभक्त है, जिसके गुण कर्म स्वभावानुसार लोग कार्य में लाते हैं। ऐसे मन्त्र-तन्त्र शास्त्र से प्राचीन ग्रन्थ असफल नहीं होते वर्तमान समय में लोगोंके अविश्वास और साहस हीनता अकर्मण्यता के कारण चाहे जो कुछ हो जाय, किन्तु यह शास्त्र बड़ा ही प्रयोजनीय तथा मनोकामना सिद्ध करने का उत्तम साधन है।

इसमें तीन भाग हैं, १-मन्त्र, २-यन्त्र, ३-तन्त्र।

अक्षरों को कोष्ठक और कमल आदिमें लिख कर बांधना यन्त्र कहलाता है और बारम्बार जप करने की मन्त्र तथा जड़ी बूटी आदि उपायों से सिद्ध करने को तन्त्र कहते हैं।

मन्त्र-तन्त्र सिद्धि के नियम

किसी गुरु द्वारा मन्त्र की पूर्ण विधि प्राप्त करके सदाचार, ब्रह्मचर्य तथा एकांत वास द्वारा इसे सिद्ध करना चाहिये, परन्तु ऐसा उपयुक्त

समागम न मिल सके तो इस पुस्तक में जैसी कुछ विधि बतलाई जाती है; उसे, ठीक ठीक करने से अवश्य सिद्धि प्राप्त होगी ।

षट्कर्म वर्णन

शान्तिकर्म, वशीकरण स्तम्भन; विद्वेषण उच्चाटन तथा मारण इन छः प्रयोगों को पण्डित जन षट्कर्म कहते हैं ।

१—किसी तन्त्र, मन्त्र; तंत्रादिक क्रिया द्वारा किसी को मार देना मारण है । २—किसी का चित्त मोह लेना मोहन है । ३—एक देश और स्थान छोड़कर दूसरे स्थान या विदेश में चला जाना या वहां से बुला लेना उच्चाटन है । ४—अपने स्वभावानुसार किसी जीव को अधीन कर लेना वशीकरण है । ५—हाथ पाँव अथवा सब अंगों का बंध जाना स्तम्भन है । ६—किसी में परस्पर बैर उत्पन्न हो जाना विद्वेषण है ।

इसके सिवाय इन्हीं प्रयोग के अन्तर्गत और भी बहुत से प्रयोग-उपप्रयोग हैं जो यहां बिस्तार से लिखे नहीं जा सकते । आगे इन्हें छः कर्मों और

प्रयोगों के मंत्र-यंत्र द्वारा सिद्ध करने को बतलाते हैं।
 ऋतु दिन नक्षत्रानुसार षट्कर्मों के करने का चक्र

कर्म	मारण	मोहन उ०	वशीकरण	स्तम्भन	विद्वेषण	शांति	
इष्ट	भद्र	अजि०	दुर्गा	सर	लक्ष्मी	वशा०	मग०
दिशा	दक्षिण	अग्नेय	वायव्य	उत्तर	पूर्व	नैऋत्य	ईशाने
शरद	क्षरद	वसंत	वर्षा	हेमांत	शशि	ग्रीष्म	हेमांत
दिन	शनि	रवि	शनि	बुध	शनि	भौम	चंद्र
तिथि	कृष्ण चतु	अष्टमी	चौथी	त्रयो०	प्रतीपदा	छठ	तीज द्वाद
नक्षत्र	पर०	मघा०	माघ०	श्लेषा	ज्येष्ठा	अदा	उपरो
वस्त्र	लाल कृष्ण	पीला	लाल	पीला	धूस्र	लाल	श्वेत

षट्कर्मों के करने का समय

प्रथम प्रहर में शांतिकर्म। दूसरे प्रहर में वशीकरण स्तम्भन और मोहन। तीसरे प्रहर में उच्चटन विद्वेषण और चौथे प्रहर में मारण कर्म किया जाता है। इतना दीर्घ विचार को न समझ सके, या न ग्रहण कर सके, यह कोई उतना आवश्यक भी नहीं है और कर सके तो बहुत अच्छा है।

मन्त्र-जप माला-निर्णय

उड्डीश तंत्र में कहते हैं मूंगा हीरा रत्न इनमें किसीकी भी माला हो तो उससे वशीकरण और दुष्ट कर्म में जप करें मनुष्य के बालों से घोड़े के दाँतकी माला गूँथ कर उससे विद्वेषण और उच्चाटन कर्ममें जप करे । युद्धके बिना अन्य प्रकार से मृतक पुरुष के दाँत अथवा गर्दभके दाँतों की माला से मारण कर्म में जप करे शंख मणिकी माला बनाकर धर्म अर्थ सिद्धि के अर्थ उससे जप करे अथवा पद्माख की माला से जप करे । रुद्राक्ष की माला सब कार्यों का उत्तम फल देती है । फिर स्फटिक, मोती, रुद्राक्ष मूंगा और पुत्र ओवा की माला विद्या प्राप्ति एवं सरस्वती की प्राप्ति के लिए ग्रहण करना चाहिए ।

माला जपने में दिशा निर्णय

वशीकरण मन्त्र जपते समय पूर्व मुंह बैठना चाहिये । मारणादि अभिचार कर्ममें दक्षिण मुख बैठकर मन्त्र जपे और धनके निमित्त पश्चिम मुख शांति कर्म में उत्तर मुख बैठकर जपना चाहिये ।

आयु रक्षा; शान्ति कर्म व पुष्टि कर्म में उच्चर
होकर मन्त्र आदि जपना चाहिये ।

जप—भेद और लक्षण

जप तीन प्रकार का होता है । वाचिक
उपांशु, मानसिक ।

जिस मन्त्र को जप करते समय दूसरा सुन
लेवे उसको वाचिक कहते हैं और जो अपने आप
को ही सुन पड़े उसको उपांशु कहते हैं तथा जिस
मन्त्र जाप में ओठ और जीभ न चलती रहे और
केवल मनसे ध्यान पूर्वक जप किया जावे उसे
मानसिक जप में अक्षर का ध्यान किया जाता है ।

मारण आदिक प्रयोग में वाचिक जप सिद्ध
दायक होता है और शान्ति व पुष्टि कर्म में उपांशु
जप तथा मोक्ष के साधन में मानस जप श्रेष्ठ कहा
जाता है, परन्तु यह तीन प्रकार का जपनाशक
और सिद्धि दायक है ।

शान्ति और पुष्टिकर्म में पद्मसूत्र के डोरे से
माला को और आकर्षक व उच्चाटन कर्म में घोड़े

को पूंक्ष के बालों से गूँथी माला शुभ होती है और मनुष्य की नसों से गूँथी माला मारण कर्म में शुभ होती है तथा अन्य कर्ममें कपास से गूँथी हुई माला से मन्त्र जप करना चाहिए । सत्ताइस दानों की माला समस्त सिद्धियों को प्रदान करती है । अभिचारकर्म में पन्द्र दानों की माला पूर्ण फल दायक होती है और तत्त्वदर्शी पण्डितों ने तांत्रिक कर्म में एक सौ आठ दानों की माला को सर्व कर्मों में पूजित माना है ।

मन्त्र जप में बैठने का आसन

वशीकरण में भेड़ा के चर्म का आसन, आकर्षण में मृगचर्म उच्चाटन में ऊँट के चमड़े का आसन मारण में कम्बलके आसन पर तथा अन्य सब मन्त्रों के सिद्धि करनेके लिये कुशका आसन होना चाहिये

हवन सामग्री

शांति कर्म में दूध, घी तिल गूलर और पीपल की लकड़ी पर अमरवेली और खोर का हवन करे । पुष्टि कर्म में घी, बेल पत्र और चमेली के फूलों का होम करे । लक्ष्मी की इच्छा करने वाल

कमल गट्टा दही और घृत से मिले हुए अन्न का हवन करे । समृद्ध लिये बिम्बफल और तिल का आकर्षण के के लिये चिरौंजी और बेल फल । वशीकरण के लिये राई और लवण का होम करना चाहिए । उच्चाटन में कौए के पंख का, मोहन में धतूर के बीज हवन करे ।

माला फेरने की अँगुलियों का नियम

शांति स्तम्भन और वशीकरण में अंगूठे और बीच अंगुली से माला को फेरे तथा आकर्षण में अंगूठे और अनामिका से विद्वेषण और उच्चाटन में अंगूठा और तर्जनी से । मारण में कनिष्ठा और अंगूठे से माला के दाने फेरने चाहिये ।

आसन

मन्त्र जपने के अनेक प्रकार के आसन होते हैं । पुष्टि कर्म में पद्मासन शांति कर्म में स्वातिक आसन विद्वेषण में कुक्कटासन, उच्चाटन में ऊर्ध्व स्वातिक मारण और स्तम्भन में विकटासन और वशीकरण में रुद्रासन से बैठना चाहिए ।

सर्वजन बशीकरण मन्त्र

दोहा-तुलसी मीठे बचन से सुख उपजत चहुं ओर
बशीकरण एक मन्त्र है तज दे बचन कठोर

बशीकरण पुष्प मन्त्र

ओं चामुण्डे जय जय वस्यम कुरु जय ज
सर्व सात्वान्कम स्वाहा ।

विधि

इस मन्त्र को ग्रहण में १०० बार जपे फि
रविवार या गुरुवार को उक्त मन्त्रसे अभिमन्त्रि
किया हुआ पुष्प जिसे दिया जायेगा वह अवश
वश हो जायेगा ।—

सर्वजन बशीकरण मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु को राजा कोहू पर उ
ब्राह्मणबणिया हनुमंत रूपमें जपत मोहूं जो रा
चन्द्र पर मणिया गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फु
मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

इस मन्त्र को प्रथम इक्कीस दिन तक सहस्र बार प्रतिदिन जपे और चन्दन फूल धूप दीप नैवेद्य नित्य प्रति करता रहे । रामचन्द्र जी का ध्यान करके चौराहे की धूल उठाकर उस पर २१ बार मन्त्र को जप कर माथे पर बिन्दी लगावे । जो देखेगा वह वश में हो जायेगा ।

मोहन मन्त्र

ॐ अड्डा महेश्वराय सर्वनाथ अं आं इं ऋ ऋ हुं फट स्वाहा ।

इस मन्त्र को एक लाख बार जप कर सिद्ध कर लेंगे ! फिर निम्नलिखित विधि अनुसार तिलक लगावे सर्व मोहन कार्य सिद्ध हो ।

सर्वजन वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो भुवन भास्काराय जगद्वश्ये द्रव्या ।
भवानी पश्चात् सुखं वश्यति तेतं स्वाहा ॥

विधि

चाक की मिट्टी आगकी राख दोनों को मिला प्रथम चौंका लगावे फिर स्नानादिसे निवृत्त होकर